बचपन की यादों

"पापा, आपकी नया किताब बहुत अच्छा है"-
पंद्रह साल की बेटी अपनी पिता से बहुत खुश
होकर कहा। "और तुम्हारी दोस्तियों ने क्या कहा?"
पापा ने बहुत आकांक्षा से पूछा। "उनको सब
बहुत पसंद आई।" "पापा मैं आपसे एक बात कहना
चाहिए" बेटी बेला कुछ डर से कहा।" "बताओ"।
पापा... मैं एक मोबैल फोण चाहता है... मेरी
पढ़न की मदद के लिए"... पापा ने कुछ नहीं
बोला। उसने सोचा " कुछ दिनों के पहले अपनी
बेटी मुझसे बहुत पैसा पूछा और मैं ने दिया।
कल उन्होंने एक नया कपड़ा लाने को कहा
और मैंने लाया। तो आज वह एक मोबैल
फोण चाहता है। मैं फोण भी उसको दिया
तो उसकी जरूरतों को एक अंत न होगा।
अगर मैं अपनी एक ही बेटी के लिए फोण
दिये तो उसकी भविष्य कैसे होगा?'
चिंताएँ से भरी अपनी पिता की चेहरे
देखकर बेटी बेला उधर से गई। सुबह की
रोशनी जब अपनी चेहरे पर आए तो राम ने
अपनी चिंताएँ से उठा। "अरे तू क्या सोचती
है राम। बेला को स्कूल से ले जाओ। अब ही
बहुत देर हो गई है" पत्नी की आवाज़ सुनकर
राम जल्दी अपनी गाड़ी से बेला को स्कूल
भेजा। फिर जब राम पक्की सड़क से आ
घर की ओर आनेवाले समय वह एक दृश्य
देखा। एक बेचारे मरद खतरे से घायला होकर,
खून थूककर सड़क में बैठ है और खतरे से

बहुत तोड़कर दो गाडियों से खून की बू
है। लेकिन कुछ नौजवानों की झुंड उस
अपनी मोबैल से ये सब शूटिंग करती है
गाड़ी में एक छोटा बच्चा और उसकी पिता
थी। फिर राम और कई लोगों उन्हें अस्पता
ले गया। जब राम अस्पताल से आये तो वह
परिस्थिति की हालत को देखकर बहुत दुःखी हुआ।

घर के अंदर बैठकर राम ने घर की
बंदा हुआ खिड़कियो देखा। तब वह उठकर
खिड़कियों खुलकर ~~अ~~ सूनी और तंग आँगन की
ओर देखा। नीली आसमानी की छाया के नीचे
अपनी आँखें खुलकर खड़ी फूल को देखनेपर
'राम ने अपनी बचपन से गई।...

" रामू .... उठो। कितनी देर हो गई है।
काम की समय आया है और तू मेरे साथ
आओ "... नानी की चिल्लाना सुनकर छोटा
रामू अपनी खटोला से उठकर बैठा। कुछ देर के
बाद उन्होंने ~~स~~ नानी की पास आई। फिर प्रभात
कर्मों की बाद वह नानी की साथ कच्ची
सड़क से चलकर अपनी छोटे पैरों को ज़मीन
में दबाकर खेतों को देखकर नानी से बहुत
कुछ बातचीत करके रामू ने अपनी मासूमियत
से चला गया। एक छोटे कस्बे में आने पर
दोनों ज़मीन से वेस्ट ~~ची च~~ चीज़ों को जमाने
के लिए शुरू किया। तब रामू ने स्कूल जानेवाली
बच्चों को देखा। उसकी मन में भी स्कूल जाने
की इच्छा आया। नौनी मैं कब स्कूल जाऊँ"
रामू ने बहुत कौतूहल से पूछा। लेकिन नानी
की काला चेहरा देखनेपर रामू उस बात को छोड़

दिया। अपनी काम जारी करते वक्त रामू को
एक सुनहली कागज की टुकड़ा मिला। उसमें
लिखे हुए बातों को वह पढ़ने की कोशिश शुरू
किया। लेकिन शिक्षा के बिना उन्होंने क्या करें।
नानी बहुत परेशान हुई थी। कुछ देर के विश्राम
के लिए दोनों अपनी छोटा पोटली खुला और
उनमें हुए रोट्टी की कुछ टुकड़ा वे खाया।
कुछ पानी के लिए वे पास के छोटा नदी में
पहुँचा। "नानी देखो कितनी मछलियाँ हैं। कितनी
सुंदर है"। नानी ने चिल्लाया "रामू तू
जल्दी पानी पीकर आओ। समय बहुत कम है।
रामू को बहुत दुःख लगा। वह नानी के साथ
गया। शाम तक लंबे कोशिश के बाद उन्होंने
मिला कुछ पैसे से घर में आए।
रामू की मन में वह सुनहली कागज की
याद आयी। वह नानी से डरकर पूछा "नानी मैं
स्कूल में जाना चाहिए"। रामू ने इतनी ही कहा
था। लेकिन उसको अपनी नानी से बहुत डाँट
मिला। दिन आगे बढ़ तो रामू की जिद
भी बढ़ी हो गई। तब उसकी नानी ने उस
छोटे बच्चे को कोई करुणा के बिना एक सेठ
में काम करने लिए लाया गया और पैसे के
लिए वह छोटे बच्चे को उधर छोड़ दिया। रामू
को उस रात को सोना नहीं सका। वह रोकर
खड़ी। सेठ की यजमान उसको डाँट दिया और
रामू ने बहुत डर हो गया।
सुबह आई। रामू की आँखें बहुत सुर्ख हुई
थी। फिर यजमान ने उसको बहुत कुछ काम दिया।
लेकिन रामू वह काम सब करने में पर्याप्त नहीं
था। वह रोकर खड़ी। यह देखकर यजमान ने

उसको बहुत कुछ मारा। अन्य बच्चे ने
चिढ़ाया और मैनेजर से उसको डाँट मिलने
लिए बहुत कुछ काम किया। कई दिनों रामू
पेट मे कुछ नहीं था। पेट भरके खाने और
की कोई अंश भी उसको उधर से नहीं मिल
रामू की बदन दिन बढ़ जाये तो शोषित हुआ।
उसको सोने को भी नहीं सकती थी।

रामू को इतनी छोटी कामना थी - किसी तरह सत्र से बचने की। वह एक दिन, ~~उधर~~ जब मैनेजर ने सत्र से निकल गई तब सत्र के बाहर आया और सूनी सड़क से दौड़कर एक कस्बे में आए। उसको बहुत कम कपड़े थी। रात की ठंड को सहने के लिए उसको नहीं सका। वह एक ~~छोटे घर~~ घर के पास आए और रोना लगा 'बचावो ... बचावो।" रोने की आवाज़ सुनकर घर से एक मरद निकल आया और उन्हें देखकर बहुत कौतूहल से कारण पूछा। रामू ने अपनी हालत के बारे में सब कुछ कहा।

रामू को असहाय समझकर जोखू नाम की उस मरद ने रामू की मदद किया। वह एक अध्यापक थी। रामू स्कूल जाने लगा और आराम के समय वह छोटे छोटे काम किया। पढ़ते पढ़ते वह बहुत बड़ा लड़का हो गई। अपनी कामना की तरह वह एक साहित्यकार बना गया। कितनी मुसीबतों सहकर रामू ने ऐसा ओहदा मिल गया।

लंबे समय के सोजने के बाद राम ने अपनी बचपन की सपना से उठा। डबडबाई आँखें से वह एक रपट पढ़ने को शुरु किया।

उसमें ऐसा लिखा था " मोबैल फोण की दुरुपस्थांग से दो लड़कियों को अपनी जान नष्ट हो गया"। सेलफी दुरंत : दो नौजवानों मर हो गई"। यह देखकर राम ने सोजा : " मेरी बेटी अब तो बहुत छोटी है। उसको गरीबी की कोई नहीं : जानना। तो उसकी जिद दिन-ब-दिन बढ़ जाती है। मैं उसकी पिता है। उसको गलतियों के बारे में समझना मेरी दायित्व है। उसको इसके बारे में समझने के लिए मुझे सिर्फ इतनी आवश्य है - मेरी बचपन की यादों...."